ISSN: 2349 – 4891
ISSN: 2349 - 4891
International
Journal of Recent Research and Applied Studies
(Multidisciplinary Open Access Refereed e-Journal)

विद्यार्थियों का आभासी कक्षा शिक्षाः वर्तमान स्थिति भोपाल जिले के संबंध में

शोध निर्देशक, डॉ रिशिकेश यादव
श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प
शोधार्थी, राजेश साहू
श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र

सारांश

शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य विद्यालयी विषयो ं में अर्जित ज्ञान या विकसित कौशल का शिक्षक द्वारा परीक्षा प्राप्तांको या अंको द्वारा निर्दिष्ट करन े से है। विद्यार्थियो ं ने किस सीमा तक अपनी योग्यताओ ं का विकास किया है, उसका आंकिक रूप मे ं प्रस्तुीकरण ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि का सूचक है। शिक्षा केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही समाज को सशक्त नही बनाती वरन् मानव संसाधन का भी सर्वांगीण विकास भी करती है। शिक्षा ही आधुनिक समाज की मजबूत नींव है शिक्षा मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक है। प्रारम्भ में शिक्षा प्रदान करने का कार्य घर–परिवार एवं समुदाय करते थ े। तत्पश्चात् व्यक्ति औपचारिक साधनों जैस े विद्यालय, कॉलेज एवं युनिवर्सिटी से शिक्षा ग्रहण करता है। माध्यमिक शिक्षा ही विद्यार्थियों के भविष्य को निधार्रित करती है किन्तु वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा शिक्षा अपनी बुर े दौर स े ग ुजर रही है। आज माध्यमिक स्तर की शिक्षा के विकास एव ं इसका स्तर स ुधारने के लिये हमारी सरकारों आ ैर अन्य सभी एजेन्सिया ें द्वारा काफी प्रयास किये जा रहे है फिर भी माध्यमिक शिक्षा का स्तर अभी तक अपने उच्चतम् सफलता की आ ेर अग्रसर नही हुआ है, न ही ये प्रयास वास्तविक रूप में धरातल पर परिलक्षित हुए हैं। विद्यालय में छात्रा ें के लिए सीखने के अनुभवो ं आ ैर स ृजित अवसरों के ज्ञान, का ैशल और दृष्टिकोण के माध्यम से उनका विकास निधार्रित किया जाता है।

1.1 प्रस्तावना

आभासी कक्षा कक्ष प्रणाली अपने उपयोगकर्ताओं को दोहरा लाभ पहुंचाने का सामर्थ्य रखती है।

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली है। देश धन–धान्य से पूर्ण था और शोर्य तथा पराक्रम में अद्वितीय था। भारत में अपार धन–सम्पदा इसलिए थी कि देश ज्ञान–विज्ञान से संपुष्ट था। भारत का वैभव उसकी शिक्षा पद्धति के कारण था। आज शिक्षा को विकास से जोड़ा जा रहा है कहा जा रहा है कि वह राष्ट्र आर्थिक रूप से विकसित है जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है।

1.2 अध्ययन के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का आभासी कक्षा परियोजना का अध्ययन भोपाल जिले के संबंध में । यह एक सर्वेक्षण प्रकार का अध्ययन है जो आभासी कक्षा का अध्ययन करने के लिए किया गया है वीसीपी की वर्तमान स्थिति जैसे कई पहलुओं के साथ उच्च प्राथमिक विद्यालयों में परियोजना, इसकी छात्रों और शिक्षकों पर प्रभाव शिक्षकों द्वारा सामना की जाने वाली कार्यान्वयन में समस्याएं प्रधानाध्यापक और संबंधित डाइट–व्याख्याता छात्रों शिक्षकों प्राचार्यों की धारणाएं संबंधित व्याख्याता आदि वर्तमान अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मुख्य रूप से आवृत्ति प्रतिशत और ची–वर्ग की सहायता से विधिवत डेटा एकत्र और विश्लेषण किया गया था विश्लेषण किए गए डेटा यहां तालिका में प्रस्तुत किए गए हैं, जिसके बाद विवरण और व्याख्या किया गया है।

1. शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य विद्यालयी विषयो ं में अर्जित ज्ञान या विकसित कौशल

का शिक्षक द्वारा परीक्षा प्राप्तांको या अंको द्वारा निर्दिष्ट करन` से है। विद्यार्थियो ं ने किस सीमा तक अपनी योग्यताओ ं का विकास किया है, उसका आंकिक रूप मे ं प्रस्तुीकरण ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि का सूचक है।

2. समायोजन :– लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सांमजस्य पूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है। यहां समायोजन से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो ं के शैक्षिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन से है।

3. माध्यमिक विद्यालय :– ऐस` विद्यालय जिनमें कक्षा 9 व 10 तक के विद्यार्थियो ं को शिक्षण करवाया जाता है, माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते है। यहां माध्यमिक स्तर में कक्षा 10वीं के विद्यार्थियो ं को लिया गया है।

कारण ही सम्भव है। हम विभिन्न प्रकार के कौशलों को अर्जित करने के लिये सीखने का ही प्रयोग करते हैं। परन्तु सबसे जटिल प्रश्न यह है कि हम सीखते कैसे हैं? अपनी इसी विशेषता और सामर्थ्य के फलस्वरुप आभासी कक्षा कक्ष प्रणाली विद्यार्थियों के लिए निम्न प्रकार से बहु उपयोगी सिद्ध हो सकती है

1.2 समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का आभासी कक्षा परियोजना का अध्ययन भोपाल जिले के संबंध में । यह एक सर्वेक्षण प्रकार का अध्ययन है जो आभासी कक्षा का अध्ययन करने के लिए किया गया है वीसीपी की वर्तमान स्थिति जैसे कई पहलुओं के साथ उच्च प्राथमिक विद्यालयों में परियोजना, इसकी छात्रों और शिक्षकों पर प्रभाव शिक्षकों द्वारा सामना की जाने वाली कार्यान्वयन में समस्याएं प्रधानाध्यापक और संबंधित डाइट–व्याख्याता छात्रों शिक्षकों प्राचार्यों की धारणाएं संबंधित व्याख्याता आदि वर्तमान अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मुख्य रूप से आवृत्ति प्रतिशत और ची–वर्ग की सहायता से विधिवत डेटा एकत्र और विश्लेषण किया गया था

आभासी कक्षाकक्ष में, छात्र एक सीखने वाले समूह का एक सक्रिय सदस्य होता है, लेकिन जिस गति से समूह के अन्य लोग सीख सकते हैं, उससे अलग–अलग स्वतंत्र रूप से सीखते और समझते हैं। आभासी भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली है। देश धन–धान्य से पूर्ण था और शोर्य तथा पराक्रम में अद्वितीय था। कक्षाकक्ष एक भौतिक स्थान के बजाय कक्षा के सदस्यों के बीच बातचीत के लिए एक 'आभासी सुविधा' प्रदान करता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और सीखना चारों ओर के परिवेश से अनुकूलन में सहायता करता है। किसी विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में कुछ समय रहने के पश्चात् हम उस समाज के नियमों को समझ जाते हैं और यही हमसे अपेक्षित भी होता है। हम परिवार, समाज और अपने कार्यक्षे त्र के जिम्मे दार नागरिक एवं सदस्य बन जाते हैं। यह सब सीखने के

विश्लेषण किए गए डेटा यहां तालिका में प्रस्तुत किए गए हैं, जिसके बाद विवरण और व्याख्या किया गया है।

1.3 आभासी कक्षा कक्ष की व्यवस्था

विद्यालय शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। ऐसी कक्षा में हम विद्यार्थियों को सब कुछ नहीं दे पाते जिसके माध्यम से उसके शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा नैतिक विकास को उचित आधार तथा दिशा प्राप्त हो, उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके।

किसी भी वस्तु या प्रक्रिया का अपने सही वास्तविक रूप में उपस्थित रहकर क्रियाशील ना होना ही अपने आप में उसकी कमी तथा सीमाओं की ओर इशारा करने में काफी रहता है। इसका लचीलापन छात्रों को गुमराह कर सकता है और वह इससे नाजायज फायदा उठाने की कोशिश भी कर सकते हैं। छात्रा अपनी शक्ति और समय को निरुद्देशीय कार्यों में खर्च कर सकते हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि आभासी कक्षा कक्ष व्यवस्था के संगठन और प्रबंधन में अधिगम सामग्री और विद्यार्थियों को उसे प्रदान करने के तरीकों की गुणवत्ता में काफी असंदिग्धता रहती है। इस कार्य हेतु जो फैकल्टी नियुक्त

की जाती है वह अपने कर्तव्यों के निर्वाह में समुचित रूप से सक्षम नहीं पाई जाती है। ऐसी कोई भी आभासी कक्षा नहीं हो सकती है जिसमें वास्तविक कक्षा शिक्षण के जीवित अनुभव, अंतः क्रिया तथा संबंधों की गुणवत्ता, सामाजिकता तथा अंतरंगता पाई जाए।

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि आभासी कक्षा कक्ष व्यवस्था में काफी कमियां हैं, जिनकी वजह से वर्तमान या कक्षा शिक्षण व्यवस्था का अंग बनाना या उसकी जगह इसे लागू करना संभव नहीं है, परंतु यह भी सत्य है कि इस व्यवस्था में इतना सामर्थ्य है कि वह सबके लिए शिक्षा तथा सबके लिए बिना भेदभाव की एक जैसी तथा बेहतरीन शिक्षा, जैसे सुनहरे सपनों को साकार कर देश की प्रगति में पूरा पूरा योगदान दे सकती है। खुले दिल से स्वीकार करना चाहिए और आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

1.4 शोध की परिकल्पना

सामान्यतः अनुसंधान की तीन विधियां निम्नवत है ं–

• **ऐतिहासिक विधि** (ऐतिहासिक अनुस ंधान का सम्बन्ध भूतकाल स ् है। यह भूतकाल का विश्लेषण करता है तथा इसका उद्देश्य भ ूतकाल के आधार पर वर्तमान का ् समझना तथा भविष्य के लिय ् तैयार होना है।)

• **प्रया ्गात्मक विधि** (प्रया ्गात्मक अनुस ंधान इस तथ्य का स्पष्टीकरण करता है कि जब सभी सम्बन्धित चरों अथवा परिस्थितिया ् पर सावधानीपूर्वक नियन्त्रण करके प्रया ्गात्मक चर में नियन्त्रण किया जाय तो क्या निष्कष ं प्राप्त होगा।)

• **वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण विधि** (वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण विधि में परीक्षणों क ् द्वारा प्रतिदर्शों से आ ंकड ् एकत्र करना तथा वर्तमान स्थिति का निर्धारण करना है।) वर्णनात्मक अथवा सव ंक्षण विधि अतीत मे ं जो कुछ भी विद्यमान था उसकी योजना, उसका वर्णन करना एवं उसकी व्याख्या करना ऐतिहासिक अनुस ंधाना ् का काय ं है परन्तु कुछ ऐस ् अनुस ंधान है ं जा ् वर्तमान तथ्या ् का अध्ययन एवं व्याख्या करते हैं, इसमें वण ंनात्मक अनुस ंधान प्रमुख है। करलिंगर के शब्दों में, श्सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक, वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अन्तग ंत व्यापक तथा कम आकार वाली जनस ंख्याओं का अध्ययन उनमें स ् चयनित प्रतिदशा ं के आधार पर इस आशय से किया जाता है

वर्णनात्मक अनुसंधान विधि

• इस अनुसंधान विधि के द्वारा हम अधिक व्यक्तियों के विषया ् के आंकड़े एक ही समय में प्राप्त करते हैं।

• इस अनुस ंधान विधि का सम्बन्ध सम्पूर्ण जनस ंख्या या उसके चयनित न्यादर्श स ् होता है, न कि व्यक्ति विश ्ष स ्।

• इस अनुस ंधान विधि के तहत शोधकर्त्ता चयनित शोध समस्या पर ही अध्ययन कार्य सम्पादित करता है। प्रस्तुत अध्ययन के लिय ् शोधार्थी द्वारा भोपाल संभाग (मध्य प्रदेश) के फंदा एवं बेरासिया के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कक्षा 9वी ं एवं 10वीं के 13 आय ु वग ं के छात्र एवं छात्राओं को जनस ंख्या के रूप में च ुना गया जिनकी संख्या लगभग 10,913 है।

न्यादर्श

जब किसी जनस ंख्या में स ् किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिये उसकी कुछ एक इकाइयों को च ुन लिया जाता है ता ् इस च ुनने की क्रिया को न्यादर्शन (Sampling) कहते है ं तथा च ुनी हुई इकाइयों के समूह का ् न्यादर्श कहते हैं। ड ्मिंग (1984) के अनुसार प्रतिचयन सम्पूण ं अध्ययन क्ष ्त्र का केवल एक अंश मात्र ही नही ं है बल्कि प्रतिचयन वह कला तथा विज्ञान है जिसकी सहायता स ् उपया ्ग में लाय ् जाने वाल ् आ ँकड ों की विश्वसनीयता का ् प्रसम्भाव्यता सिद्धान्त के द्वारा नियंत्रण में रखा जा सकता है तथा उसका मापन भी किया जा सकता है।

1.5 □□□□□□□□ □□□□□□□□□□

जैसा कि वर्तमान अध्ययन विस्तृत जानकारी एकत्र करने के लिए आयोजित किया गया था मौजूदा वर्तमान परिस्थितियों को सही ठहराने के लिए डेटा को नियोजित करने के इरादे से घटनाएँ सर्वेक्षण विधि प्रस्तुत अध्ययन को क्रियान्वित करने में अनुसंधान का प्रयोग किया गया है। सामान्य या वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध किसी दी गई घटना की वर्तमान स्थिति के विवरण की ओर उन्मुख होते हैं। शोधार्थिनी द्वारा वर्तमान शोध अध्ययन हेतु भोपाल संभाग के फंदा एवं बेरासिया विकासखण्डों के माध्यमिक विद्यालयों का चयन अनियमित न्यादर्श विधि द्वारा किया गया जिनमें से सरकारी धमंतोडी (कक्षा 1 से 8) संदीपन गवर्नमेंट सेकेंडरी स्कूल सरकारी एमएस अरवालिया (कक्षा 1 से 8) सरकारी एमएस अमझरा (कक्षा 1 से 8) शासकीय शुभाष प्राथमिक शाला बालक बसई संदीपन गवर्नमेंट सेकेंडरी स्कूल शासकीय मध्य विद्यालय करारिया नई का चयन किया गया।

तालिका संख्या–1: भोपाल संभाग के अंतर्गत विकास खंड

भोपाल संभाग के अंतर्गत विकास खंड	
विकासखण्ड का नाम	फंदा
	बेरासिया

तालिका संख्या–2: चयनित जनस ंख्या

s.no	**अध्ययन हेतु चयनित जनस ंख्या**
1	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के सरकारी विद्यालय के कक्षा 9वी ं एवं 10वीं के 13 + आय ु वग र् के समस्त छात्र
2	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के सरकारी विद्यालय के कक्षा 9वी ं एवं 10वीं की 13 + आयु वर्ग की समस्त छात्रायें
3	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के गैर सरकारी विद्यालय के कक्षा कक्षा 9वी ं एवं 10वीं के 13 + आय ु वग र् के समस्त छात्र
4	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के गैर सरकारी विद्यालय के कक्षा 9वी ं एवं 10वीं की 13 + आयु वर्ग की समस्त छात्रायें

तालिका संख्या–.3 कम्प्यूटर अभिवृत्ति

Computer attitute	Students	N	M	SD	T value	Remark
Govt & Private Sec. Level	Male	310	77.96	8.05	3.23	signiicant
	Female	320	76.30	8.76		

तालिका संख्या–4 व्यक्तित्व गुण

Personanlity Trait	Data of Secondary School Male & Female students	
Activity	276	275
Passivity	21	35
Enthusiastic	273	278
Non Enthusiastic	26	22
Assertive	210	199
Submissive	87	101
Suspicious	103	127
Trusting	196	172
Depressive	103	126
Non-Depressive	199	181

1.6 आंकड़ों का विष्लेषण (Analysis of Data):

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनर त्छात्र–छात्राओं का कम्प्यूटर अभिवृत्ति स्तर निम्न प्रकार पाया गया।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की कम्प्यूटर अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

1.7 निष्कर्ष

तालिका सख्या–4 में सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के कम्प्यूटर अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 77.96 एवं 76. 30 तथा मानक विचलन मान 8.05 एवं 8.76 की गणना की गयी। दोनों समूहों के टी–अनुपात की गणना करके टी–मान 3.23 प्राप्त हुआ, जो कि सारणीयन मान 0.05 सार्थकता स्तर एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 1.96 एवं 2. 59 से अधिक है अतः दोनों ही सार्थकता स्तर पर परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। H2.0 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की विभिन्न व्यक्तित्व गुणों के आधार पर कम्प्यूटर अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है। H2-1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सकियता–निष्क्रियता (Activity Passivity)व्यक्तित्व गुण वाले छात्रों के कम्प्यूटर अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

शिक्षा की राह मे ंचुनौती

भारत मे ं बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी का अभाव व इंटरनेट की कम गति ई–शिक्षा की राह मे ंसबसे बड़ी चुनौती है।वर्चुअल क्लासरूम में प्रैक्टिकल या लैब वर्क करना मुश्किल होता है।भारत के ग्रामीण क्षत्रे ो ं मे ं शहरी क्षेत्रो ं की भांति विद्युत व्यवस्था का अभाव है, जा ` ई–शिक्षा मेंरुकावट बन सकती है।

संदर्भ सूची :

[1] Gupta, K. A. and Baliya, J. N.(1991). “Components of

Computer Education" , Journal – The Primary Teacher, Vol. 16, No. 1, pp. 20-22. January.

[2] Francis, L.; Katz, Y.J. and Evans, T. (1996) "The relationship between personality attitude towards computer an investigation among female undergraduate students" in Israel, British, Journal of Education and technology 27 : 3 PP 161-170

[3] अग्रवाल, वाई.पी. (2000) : सांख्यिकी विधियाँ, स्ट्रेलिंग पब्किेशन प्रा.लि., नई दिल्ली।

[4] बेस्ट, जॉन डब्लयू (1963) : रिसर्च इन एज्यूकेशन, प्रेन्टीस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0लि0, नई दिल्ली।दबू ़, भावेश चन्द्र (2011) : ''विद्यार्थियो ं की शैक्षिक उपलब्धि पर शै ैक्षक अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव, आधुनिक भारतीय शिक्षा, वर्ष 31, अंक 3 जनवरी 2011, पेज 89–95

[5] कुमार स ुभाष, चा ै0 चरणसि ंह विश्वविद्यालय म ़रठः उच्चत्तर माध्यमिक विद्यार्थियों की अधिगम की समस्याआ ़ें में श ैक्षिक अभिप्र ़रणा का उनकी अध्ययन आदत, समायोजन तथा श ैक्षिक–उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, 2009

[6] कुमार एस0 के0, केरल यूनिवसि र्टीः फैक्टस र् इनफ्लुएंसि ंग एल्कोहॉलिक्स एण्ड ड्रग एडिक्सन अमंग इन कॉलेज स्टूडेंट्स इन केरल, 1992 ग ुप्ता ए0, पंजाब यूनिवसि र्टीः पस र्नैल्टी एण्ड मेंटल हैल्थ कॉनकोमिटेंट ऑफ रिलीजियसनेस इन द तिब्बतन स्टूडेंटस इन एडोलिस ़ेंट ऐज ग ुप, 1980

[7] ग ुप्ता एस0पी0, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, सांख्यिकीय विधिया ं, 2003

[8] सुषीला कुजूर, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के कम्प्यूटर अभिवृत्ति 2018 य 6(2): 151–156

[9] Archana KP (2002). Correlates of Academic Achievement. Indian J.Educ. Res. 21:75-76.Ed. Cairns and Christopher Alan Lewis (2002). Collective Memories, Political Violence and Menatl Health in Northern Ireland, published by Ame. J. Psych. Asha, C.B. (2003):

[10] Creativity–Intelligence, Academic Stress and Mental Health. Journal of Community Guidance and Research, vol.20 (1), 41-47.

[11] अनिल कुमार तवे तिया :'दिल्ली के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो ं और शिक्षको ं पर लॉकडाउन के प्रभाव का अध्ययन', भारतीय आधुनिक शिक्षा (अंक–1), जुलाई, 2020, पृ. 23–29

[12] मिशेल, जे.एम. (2003). इमर्जिंग फ्यूचर्सः इनोवेशन इन टीचिंग एण्ड लर्निंग वी.ई.टी.ए.एन.टी.ए. मेलबार्न।

[13] पटेल,माधव(2018), शिक्षा में नवाचारः

[14] कुमार, डॉ. अमित (2015). भारतीय शिक्षक शिक्षा में अभिनव दृष्टिकोणः टवस.5)प्छ–2277–1255